



पर्यावरण को जानें

पर्यावरण शब्द, परि तथा आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है 'चारों ओर' तथा आवरण का अर्थ है 'घेरा'। हमारे चारों ओर जो भी दिखाई देता है जैसे-हवा, पानी, मिट्टी, धूप, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, मनुष्य व अन्य वस्तुएं सभी पर्यावरण का हिस्सा हैं। ये सभी हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।



पर्यावरण की आवश्यकता एवं महत्त्व—

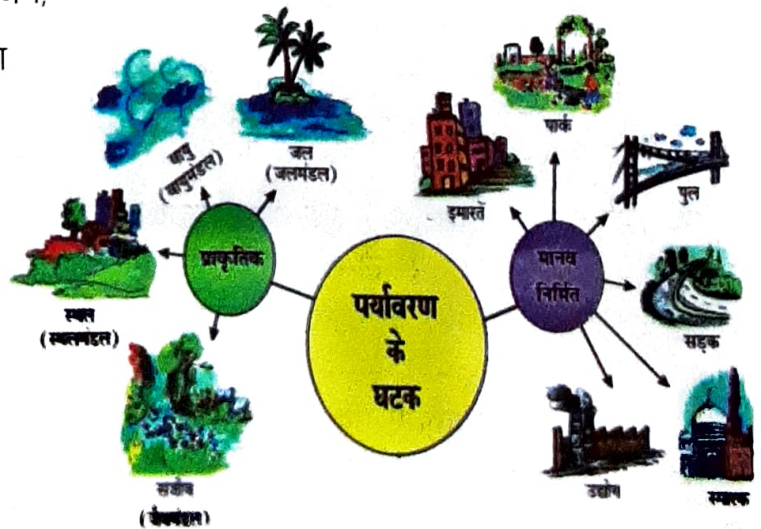
हमारे आस-पास का दृश्य

पर्यावरण से ही पृथ्वी पर समस्त जीवधारियों का अस्तित्व है। साँस लेने के लिए ऑक्सीजन हमें पर्यावरण की हवा से मिलती है। इसी प्रकार जल भी समस्त जीवधारियों के लिए आवश्यक है। यहाँ तक कि हमारी मूलभूत आवश्यकताओं अर्थात् भोजन, कपड़ा और मकान की पूर्ति भी हमारा पर्यावरण ही करता है। अन्य जीवों को भी भोजन और आवास पर्यावरण से ही मिलता है।

पर्यावरण के प्रकार

पर्यावरण को हम दो भागों में बाँट सकते हैं

1. प्राकृतिक (भौतिक) पर्यावरण
2. मानवीय (सामाजिक) पर्यावरण



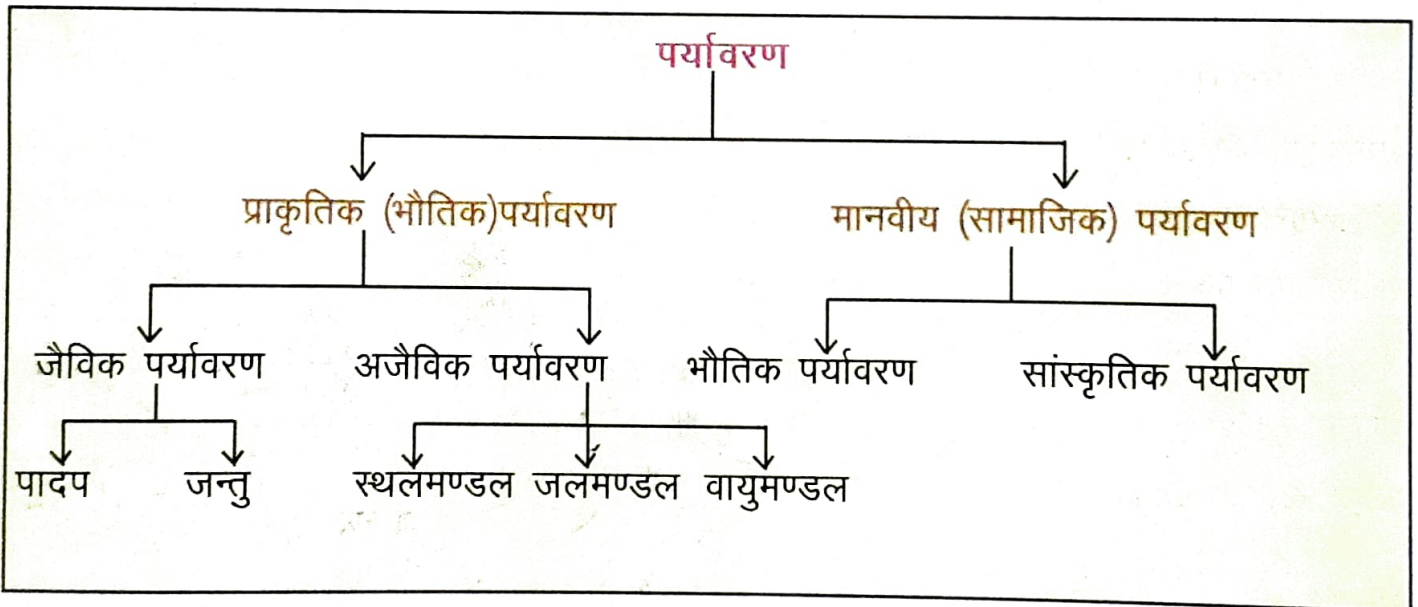
प्राकृतिक पर्यावरण— इसके अन्तर्गत पर्यावरण का वह हिस्सा आता है जो प्रकृति हमें प्रदान करती है जैसे—जल, हवा, मिट्टी, पेड़—पौधे, जीव—जन्तु, सूर्य, नदी, पहाड़ आदि। इनको हम स्वयं नहीं बना सकते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण को हम पुनः दो भागों में बाँट सकते हैं—

1. **जैविक पर्यावरण**— इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के जीव—जन्तु, मनुष्य और पेड़— पौधे आते हैं।
2. **अजैविक पर्यावरण**— यह स्थल (भूमि), जल और वायु से मिलकर बना है। इसके निम्न तीन रूप हैं—
स्थलमण्डल— पृथ्वी की सतह के ठोस भाग को स्थलमण्डल अथवा भूमण्डल कहते हैं। इसके अन्तर्गत पर्वत, पठार, रेगिस्तान, मैदान आदि आते हैं।

जलमण्डल—पृथ्वी के जल वाले सभी भागों को सम्मिलित रूप से जलमण्डल कहते हैं। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से घिरा है। इसके अन्तर्गत महासागर, सागर, नदी, तालाब, झील, नहर, नाले आदि आते हैं।

वायुमण्डल—पृथ्वी के चारों ओर पाई जाने वाली वायु, वायुमण्डल का निर्माण करती है। वायुमण्डल में ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड, ऑर्गन आदि गैसों पाई जाती हैं।

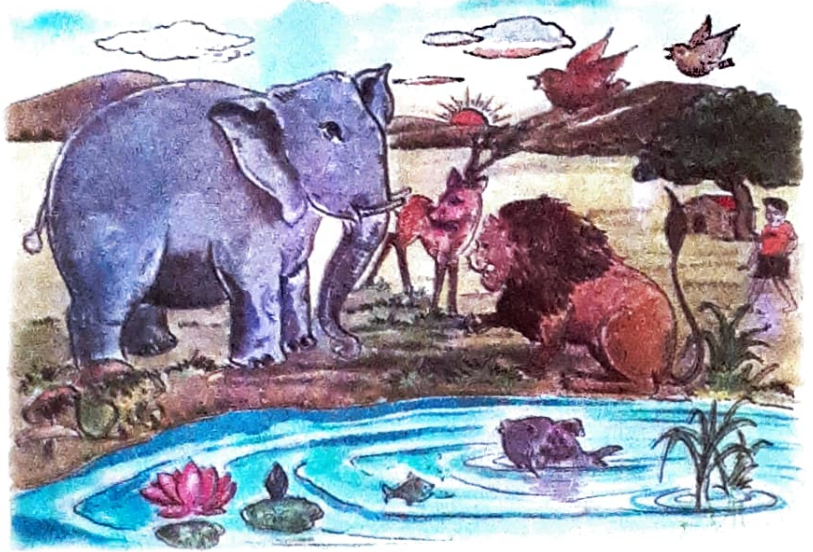
मानवीय (सामाजिक) पर्यावरण— ऐसी वस्तुएँ जो मनुष्य द्वारा निर्मित हैं जैसे—मकान, सड़क, बाजार, गाँव, शहर, रेल, मोटर, वायुयान आदि हमारे सामाजिक पर्यावरण के भाग हैं। सामाजिक पर्यावरण का निर्माण हम प्राकृतिक पर्यावरण की सहायता से करते हैं। घर—परिवार, गाँव—शहर, बाजार, पंचायत, थाना, डाकखाना, विद्यालय, अस्पताल, कल—कारखाने आदि संस्थाएँ, सामाजिक पर्यावरण के अंग हैं।



हम अपने त्योहारों, परम्पराओं, विभिन्न प्रकार के रीति—रिवाजों का पालन समाज में रहकर ही करते हैं। मेलों, उत्सवों, नृत्य, कला एवं संगीत सम्बन्धी कार्यक्रमों का आयोजन भी समाज में ही होता है। इनसे मिलकर हमारा सामाजिक पर्यावरण बनता है।

जीव-जन्तुओं की पारस्परिक निर्भरता

हमारे प्राकृतिक पर्यावरण की रचना जैविक व अजैविक घटकों से मिलकर हुई है जिसमें दोनों घटक एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। ये दोनों घटक एक-दूसरे के पूरक हैं। हरे पौधे सौर ऊर्जा का उपयोग करके अपना भोजन स्वयं बनाते हैं इसलिए ये **स्वपोषी** कहलाते हैं। सभी जीव-जन्तु भोजन के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पौधों पर निर्भर हैं। पौधों से अपना भोजन प्राप्त करने वाले जीव शाकाहारी कहलाते हैं, उदाहरण के लिए हिरन, खरगोश, गाय, टिड्डा आदि। इसी प्रकार कुछ ऐसे जन्तु होते हैं जो शाकाहारी जन्तुओं को अपने आहार के रूप में लेते हैं। इन्हें मांसाहारी जन्तु कहते हैं। जैसे-शेर, बाघ, भेड़िया आदि। मांसाहारी जन्तु विभिन्न प्रकार के जीवों जैसे-मेढक, मछली, हिरन, सांप आदि को आहार के रूप में ग्रहण करते हैं। अन्त में सभी जन्तुओं का अवशेष फिर से मिट्टी में मिल जाता है। इस प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है।



अभ्यास

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

- (क) पर्यावरण से आप क्या समझते हैं?
- (ख) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण में क्या अन्तर है ?
- (ग) अपने पर्यावरण के दस अजैविक घटकों के नाम लिखिए।
- (घ) अपने विद्यालय परिसर में पाए जाने वाले जैविक घटकों की सूची बनाइए।

प्रश्न-2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

- (क) प्रकृति, जल, स्थल, वायु, पेड़-पौधों एवंसे मिलकर बनी हैं।
- (ख) पृथ्वी के जल वाले भाग को कहते हैं।
- (ग) जैविक एवं अजैविक घटक एक दूसरे के हैं।
- (घ) टिड्डा एक जीव है।
- (ङ) विद्यालय पर्यावरण का हिस्सा है।

